BLM Academy
Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (NTL)
Ph. No. 05946 - 210831, Mob.: 7520068217

शिक्षक का स्थान

September 2009

बचपन से पढ़ते आये गुरू का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा है। बचपन में देखा था कि जब भी मेरी पिताजी के गुरूजी घर पर आते थे, तो पिताजी उनके सामने पूरे समय खड़े रहते थे, उनके साथ बैठकर चाय पीना तो बहुत दूर। यह उनका उनके लिए सम्मान था, किन्तु आज शिक्षक के लिए वह सम्मान कहाँ ? पता नहीं कब वह परिदृश्य बदल गयी शिक्षक की वह तस्वीर जो सम्मान के लायक थी।

दोषी कौन ? शिक्षक या शिक्षा प्रणाली या समाजिक व्यवस्था ? मैं शिक्षा प्रणाली व सामाजिक व्यवस्था को दोष दूँगी, क्योंकि पहले शिक्षा प्रणाली व सामाजिक व्यवस्था बदली तब शिक्षक। बदलती सामाजिक व्यवस्था व भ्रष्टाचार के इस युग में जहाँ भौतिक सुख सुविधायें आपके जीवन का स्तर निर्धारित करती हैं व आपके सम्मान का मापदंड होती है, शिक्षक इससे अछूता नहीं रहा और वह इस दौड़ में शामिल हो गया। परिध्णामस्वरूप या तो उसने इस व्यवसाय में आना ही नहीं चाहा या आया भी तो पैसे की पीछे भागने लगा और अपना स्थान खो दिया। सरकार को या विद्यालय प्रबन्धन को कहाँ शिक्षक की सुधि क्योंकि सरकार को वोट बटोरने होते हैं व विद्यालय प्रबन्धन को पैसा, लिहाजा एक शिक्षक अपनी योग्यता, क्षमता व आवश्यकता के अनुरूप, समाज में एक सम्मान जनक स्थिति में जीने लायक पर्याप्त धन नहीं प्राप्त कर पाता है और ट्यूशन का सहारा ले लेता है।

शिक्षक से एक आदर्श शिक्षक की अपेक्षाये होती है। उन पर खरा न उतरने के कारण, विद्यालयी शिक्षा में गुणवत्ता के ह्रास हेतु उसे ही जिम्मेदार माना जाता है। वह स्कूल प्रबन्धन, प्रशासन, अभिभावक व विद्यार्थियों की अपेक्षाओं के बीच पिस रहा है। यह कोई जानने की कोशिश ही नहीं करता कि उसकी क्या अपेक्षायें हैं।

निजी विद्यालयों में सेवा नियोजित अधिकतर अध्यापकों की स्थिति का आकलन करने की फुर्सत किसे ? वह कार्य के बोझ से दबा है। 06 से लेकर 07 पीरियड तक नियामित कार्य का भार, इसके अतिरिक्त अनुपस्थित शिक्षकों के कारण 01 या 02 पीरियड का सब्सटिट्यूशन परीक्षायें, प्रतियोगितायें, उनकी तैयारी व रिकार्ड को रखना, विद्यार्थियों की समस्या का समाधान देना, विभिन्न ड्यूटीज देना, डायरी भरना, पढ़ाने हेतु पाठ तैयार करना नोट्स तैयार करना, समय–2 पर विद्यालय प्रशासन व प्रबन्धन द्वारा माँगी गयी जानकारी उपलब्ध कराना, आदि–2 आदि जिम्मेदारियों के बीच, जरा सी गलती या अभिभावक से शिकायत आने पर निष्कासन की तलवार उसके सिर पर लटकती रहती है। कई बार कुछ मामलों में तो उससे दिये गये वेतन से दुगने तिगुने कार्य की अपेक्षा की जाती है जैसे कि वह एक कर्मचारी नहीं एक गुलाम है। इस तथ्य से बेपरवाह कि शिक्षक भी एक सामाजिक प्राणी है उसे भी कुछ सामाजिक दायित्व निभाने होते हैं, कई विद्यालय उसे आवश्यक अवकाश करते हैं और जिसका खमियाजा विद्यार्थियों को भुगतना पड़ता है। वह स्कूल में काम करने की मशीन बन गया है जो विद्यालय के कार्यों को करने के लिए एक कम्प्यूटर की तरह

के अनुपात में विद्यार्थी को कितना लाभ पहुँचता है, उसका आकलन करने का किसी के पास न समय है न ज्ञान। शिक्षक व्यस्त है और प्रशासन खुश। यदि हम विद्यालय में शिक्षक द्वारा किए जा रहे कार्यों पर नजर डालें तो पायेंगे कि अधिकतर कार्य, अभिभावकों या प्रशासन या प्रबन्धन को खुश करने के लिए होते हैं। जिनका विद्यार्थी को बहुत कम लाभ पहुँचता है। शिक्षक भी सीख लेता है कैसे प्रशासन को खुश करना है, एक शिक्षक के शब्दों में – मैं समय पर स्कूल आता हूँ समय पर कक्षा में जाता हूँ जो जानकारी माँगी जाती है, उसे समय पर देता हूँ विद्यालय प्रशासन की हाँ में हाँ मिलाता हूँ और एक अच्छा टीचर कहलाता हूँ, यह देखने की फुर्सत किसे कि मैं कक्षा में नहीं पढ़ाता हूँ।

अधिकतर मामलों में, एक अनुभवी शिक्षक मानें, एक अच्छा क्लर्क जो बहुत अच्छा, कागजी कार्य कर सके। अपने लम्बे प्रशासनिक कार्य में बहुत से शिक्षकों का साक्षात्कार लेने का सौभाग्य प्राप्त किया, किन्तु यह देखने को नहीं मिला कि शिक्षक शिक्षध में संलिप्त (इनवौल्व) हुआ हो। उसने अनुभव से कोई शिक्षा नीती बनाई हो, कई बार तो अभ्यार्थी विषय से सम्बन्धित छोटे – 2 प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाते हैं। यदि उसे पूछा जाय कि किसी पाठ को वह भिन्न स्तर के विद्यार्थियों को कितने तरह से पढ़ा सकता है, तो उसका उत्तर असन्तोषजनक होगा। यहाँ तक कि यदि शिक्षक जिसके पास लम्बा शिक्षण अनुभव है को पूछा जाय कि यदि उसे नियुक्त किया गया तो वह अपना शिक्षण कार्य कैसे प्रारम्भ करेगा, तो यह उत्तर शायद ही मिले कि पहले वह विद्यार्थियों के स्तर की जाँच करेगा और तदनुरूप अपनी शिक्षण नीति बनायेगा। उसे स्वयं नहीं पता कि लम्बे शिक्षण काल के बाद उसका कितना बौद्धिक विकास हुआ है उसकी शिक्षण पद्धति में कितना सुधार हुआ है व उसके ज्ञान में कितनी वृद्धि हुई है। वह कार्य के बोझ के तले विद्यालय में व तत्पश्चात घर में इतना दबा है कि उसे अपने बारे में सोचने का समय ही नहीं।

मैंने अपने लम्बे अनुभव में पाया है कि जिस तरह के कार्य की एक शिक्षक से अपेक्षा की जाती है वह यदि शत प्रतिशत करता है तो उसके पास शिक्षा में कोई प्रयोग करने या कुछ नया करने के बारे में सोचने का समय नहीं होगा, क्योंकि स्वतन्त्र मास्तिष्क में ही विचार आते हैं जो एक शिक्षक के पास नहीं है। यही कारण है कि विद्यालयी शिक्षा का परम्परागत स्वरूप एक पीढ़ी को यथावत् हस्तान्तरित हो रहा है।

तनाव मुक्त वातावरण में काम करने में एक शिक्षक की कार्य क्षमता सर्वाधिक होती है। विद्यालय की प्रगति, शिक्षक शिक्षिकाओं के पूर्ण सहयोग पर निर्भर करती है। यह विद्यालय प्रशासन की कुशलता है कि वह किस प्रकार उनसे कार्य ले कि वे भी कुशल शिक्षक साबित हों व विद्यालय प्रशासन के साथ पूर्ण सहयोग करें व विद्यार्थियों के विकास एवं प्रगति में योगदान करें।

विद्यालय प्रबन्धन व प्रशासन की क्षमता का आकलन इसी बात से किया जा सकता है कि उन्होंने कितने कुशल शिक्षक बनायें, किन्तु विद्यालयों में इस तरह की योजनाओं का नितान्त अभाव देखने को मिलता है।

यह सत्य है कि धन के अभाव के कारण कभी – 2 शिक्षकों को समुचित वेतन देना सम्भव नहीं होता, किन्तु धन के अतिरिक्त अन्य कई रास्ते है कि शिक्षकों को यह अहसास दिलाया जा सके कि वे विद्यालय

की प्रगति में बराबर के भागीदार है। समय – 2 पर उनके कार्य की मान्यता, अभिस्वीकृति (recognition or acknowledgement) व सराहना आवश्यक है ताकि उनका मनोबल बना रहे और परिणाम स्वरूप उत्साह बना रहे। उसे कार्य तो दिया जाय किन्तु उसे लगे कि प्रबन्धन व प्रशासन उसके शासक नहीं वरन् उसके साथ हैं। उसे एक ऐसा माहौल दिया जाय कि व अपने को विद्यालय परिवार का सदस्य समझे न कि कर्मचारी। तब निश्चित ही उसकी क्षमता में वृद्धि होगी जिसका लाभ विद्यार्थियों को मिलेगा।

आज जहाँ कर्मचारी की कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए व उससे अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए कॉरपोरेट सेक्टर, प्रशासन के स्थान पर प्रबन्धन की भिन्न – भिन्न नीतियाँ बना रहे हैं, विद्यालय प्रबन्धन इस सबसे बेखबर, आज भी वही पुरानी 'सख्ती' की नीति बनाकर अपना व विद्यार्थियों का नुकसान कर रहे हैं। एक शिक्षक विद्यालय का मानव संसाधन है। मैं शिक्षक को कार्य दिये जाने की विरोधी नहीं किन्तु उसे बौद्धिक कार्य या शोध का कार्य दिये जाने की पक्षधर हूँ ताकि उसके सोचने समझने की क्षमता विकसित हो उसमें लौजिक और रीजनिंग विकसित हो वह एक बुद्धिजीवी बनकर उभरे जिससे विद्यार्थी लाभान्वित हों। उसे विद्यालय में पर्याप्त समय व सुविधायें दी जायें कि वह शिक्षण पद्धतियाँ व बाल मनोविज्ञान पर कुछ शोध करे। हर विद्यालय में शोध एवं विकास विभाग का होना आवश्यक है। उनके लिए वर्कशाप व सम्मेलनों का आयोजन हो, ताकि वे बौद्धिक रूप से विकसित हो, जिससे उन्हें अपने कार्य से सन्तोष मिले, उनका व्यवहार नियंत्रित हो उनकी कार्य क्षमता बढ़े व उसका लाभ विद्यार्थियों को मिले।

आज का शिक्षक भी अपने छोटे–2 हितों में उलझने के कारण किसी दूरगामी बड़े लाभ से वंचित है। कितने ऐसे शिक्षक हैं जिन्हें अपने विद्यार्थियों से यह प? प्राप्त हुआ है कि "आपने मेरी जिन्दगी को संवारा है" यह श्रेय धन से कहीं की मती है कि एक जिन्दगी को दिशा मिली।

अतः शिक्षकों को विचार करने की आवश्यकता है कि वे कैसे अपने विद्यार्थियों के चहेते शिक्षक बने व उनकी जिन्दगी को प्रभावित करें व विद्यार्थियों के भविष्य को स्वर्णिम बनाने में हकदार बनें। विद्यालय प्रबन्धन व प्रशासन को भी व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर शिक्षकों व विद्यार्थियों के सामूहिक हितों की रक्षा करनी चाहिए। शिक्षकों को ऐसा माहौल देना चाहिए कि वे एक कुशल शिक्षक बन सकें व उनकी पूर्ण क्षमता का उपयोग विद्यार्थियों को मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ, अदम्य क्षमता के धनी व देश के सभ्य, जागृत व सफल मानव संसाधन बनाने में हो सके।

आवश्यकता है शिक्षक को उसका स्थान दिये जाने की ताकि देश प्रगति कर सके और एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था को साकार रूप देने की जहाँ पर सबके, प्रबन्धन अभिभावक शिक्षक व विद्यार्थियों के हितों की रक्षा हो।

श्रीमती रजनी कान्ता बिष्ट

प्रधानाचार्या
बी॰ एल॰ एम॰ एकेडमी